भय पर सीधी बातचीत

परमेश्वर के वचन की सामर्थ से भावनात्मक युद्ध पर विजय प्राप्त करना!

जॉयस मेयर

पूर्व प्रकाशित शीर्षक *सहायता किजिए – मैं भय भीत हूँ!*

भय

पर सीधी बातचीत

भय

पर सीधी बातचीत

परमेश्वर के वचन की सामर्थ से
भावनात्मक युद्ध पर विजय प्राप्त करना!

जॉयस
मेयर

JOYCE MEYER
MINISTRIES®
Nanakramguda, Hyderabad - 500 008

Unless otherwise indicated, all Scripture quotations are taken from *The Amplified Bible* (AMP). *The Amplified Bible, Old Testament* copyright © 1965, 1987 by Zondervan Corporation. *The Amplified Bible, New Testament,* copyright © 1954, 1958, 1987 by The Lockman Foundation. Used by permission.

Scriptures quotations marked KJV are taken from the *King James Version* of the Bible.

Originally published as *Help Me I'm Afraid.*

Copyright © 2013 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia.

Joyce Meyer Ministries - Asia
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

Straight Talk on FEAR - *Hindi*
Overcoming Emotional Battles with the Power of God's Word!

Printed at:
Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad - 500 004

विषय सूची

	परिचय	vii
भाग एक	**भय से छुटकारा**	1
1	भय का सामना	3
2	सभी विषयों के लिए प्रार्थना करे और किसी से न डरें!	15
3	प्रार्थना के प्रकार	29
4	स्वर्गीय राज्य की कुंजियाँ	45
	सारांश	59
भाग दो	**वचन**	61
	भय पर विजय हेतु कुछ वचन	63
	प्रार्थना	
	भय से सामना करने के लिए	67
	प्रभु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के लिए	69

परिचय

प्रभु यीशु मसीह में उपलब्ध कई अत्मिक मीरासों में से एक है भय से छुटकारा पाना। यदि हम डर भी जाए तो हम आगे बढ़ सकते हैं क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ रहता है रक्षा करने के लिए। वह हमारे साथ चलकर हमारी सहायता करता है परेशानियों का सामना करने के लिए और उनसे विजयपूर्वक बाहर निकालता है, यदि हम उसकी आज्ञा माने।

यदि आपको लगता है कि भय के कारण कई चीजों को नही पा सकेते आप भय पर विजय प्राप्त कर सकते है ताकि परमेश्वर द्वारा आपके लिए निर्धारित बहुतायत जीवन का आंनद आप ले सकें ।

भाग एक

भय से छुटकारा

1

भय का सामना

...तेरे संग चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है। वह तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा।

व्यवस्थाविवरण 31:6

1

भय का सामना

पवित्र शास्त्र में "मत डर, मैं तेरे संग हूँ... मैं तेरा परमेश्वर हूँ" का अर्थ अलग अलग प्रकार से वर्णन किया गया है। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम डरे क्योंकि डर हमें परमेश्वर कि योजनाओं से दूर करता है। परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और आशीष देना चाहता है इसी कारण हमारे लिए कई मार्गो को उसने सिद्ध किया है ताकि हम डरे नही।

हम निम्नलिखित वचन में देख सकते है कि हम विश्वासी जो कि प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते है उन चीजों से डरने कि ज़रुरत नहीं जिन से अविश्वासी – "इस संसार के लोग" डरते है। परमेश्वर नही चाहता कि हम उन चीज़ों से डरे।

> क्योंकि यहोवा दृढ़ता के साथ मुझ से बोला और इन सी चाल चलने को मुझे मना किया, और कहा, जिस बात को यह लोग

> राजद्रोह कहें, उसको तुम राजद्रोह न कहना, और जिस बात से वे डरते है उससे तुम न डरना और न भय खाना। सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना; उसी का डर मानना, और उसी का भय रखना।
>
> यशायाह 8:11-13

परमेश्वर अपने वचन के द्वारा कहता है कि हम विजयर्पूवक जीवन जी सकते है उसके शक्ति के द्वारा। और उसने हमसे वादा किया है कि वह हमें कभी न छोडेगा और न ही धोखा देगा चाहे कुछ भी हो।

कोइ डर नहीं!

हमे विश्वास से कदम रखना सीखना है। सब जो कि सोच में भी डरते थे। हमें जानना चाहिए कि भय का मूल है शैतान। क्योंकि पहला यूहन्ना 4:18 के अनुसारः

> प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता हैं; कयोंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम मे सिद्ध नही हुआ।

शैतान हमें डराकर इतना भयभीत और परेशान करता है कि हम संदेह में उलझे रहे और परमेंश्वर द्वारा हमारे लिए नियोजित चीज़ों व आनंद से दूर रहे और प्राप्त न कर सकें।

हम निडरता से जी सकते हैं यदि हम अपने विश्वास को परमेश्वर के वचन पर बान्धे रखें। उदाहरणः

क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नही पर सामर्थ और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

2 तीमुथियुस 1:7

तू हियाव बाँध और दृढ़ हो, उनसे न डर और न भयभीत हो; क्योंकि तेरे संग चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है; वह तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा।

व्यवस्थाविवरण 31:6

रोमियों 10:17 से हम जानते है कि "अतः विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" हमें उपर्युक्त जैसे वचनो को सीखना चाहिए ताकि प्यास लगने पर हम उन्हे पानी की तरह पी सके। जब हम अपना मुँह खोलकर अंगीकार करते हैं जो प्रभु हमारे लिए और हमारे बारे मे कहता है तब परमेश्वर का वचन हमें सामर्थ देता है उन विषयों पर विजय प्राप्त करने के लिए जो हमें परेशान करते है।

और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। जब हम जानते है, कि जो कुछ हम माँगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उससे मांगा, वह पाया है।

1 यूहन्ना 5:14,15

प्रार्थना करने और परमेश्वर के वचन को अंगीकार करने में सामर्थ है जो कि उसका प्रकाशित संकल्प है। प्रार्थना के समय सबसे प्रमुख काम जो हम कर सकते है वह है परमेश्वर के वचन का उच्चारण करना।

जीवन में जब हम परेशानियों का सामना करते हैं या उनसे बचने कि कोशिश में लगे रहते हैं, ऐसे समय में हमें परमेश्वर से प्रार्थना करना चाहिए कि उसने जो कुछ भी हमसे वादा किया है उसके वचन में उसको पूरा करे और हमारे आगे चलकर हमारे मार्ग को सरल करें। (याकूब 4:2) मे हम पढ़ते है कि "हमें इसलिए नहीं मिलता, कि हम मांगते नहीं।" प्रभु यीशु मसीह चाहता है कि हम माँगे, ढूँढ़े और खटखटाए। (मत्ती 7:7)।

जब हम नौकरी संर्दशन या परीक्षा देने के लिए जाते है तो भय और घबराने के कारण हम परीक्षा ठीक से नहीं दे सकते जिस के कारण हम जिस पदवी के योग्य हैं उसे नहीं पा पाते इसलिए हमें प्रभु से प्रार्थना करना चाहिए कि वह हमारे मार्ग को सरल करे। तब जो कुछ भी होता है वह हमारी भलाई के लिए होता है और परमेश्वर कि इच्छा के अनुसार होता है।

डर कर भी करो!

> यहोवा ने अब्राम से कहा, अपने देश, और जन्म भूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।
>
> उत्पत्ति 12:1

यदि परमेश्वर आप से कहे कि, तुम अपने घर, परिवार और सब कुछ छोडकर ऐसे जगह चले जाओ जो तुम जानते नही तो आपको कैसे लगेगा? बहुत डर लगेगा न?

इसी तरह की चुनौति का सामना अब्राम ने किया उपर्युक्त वचन में। इसलिए परमेश्वर बार–बार कहता रहा "डर मत ।"

यही संदेश उसने यहोशू को भी दिया जब उसने यहोशू से इस्रायलियों को उस देश में ले जाने को कहा जिस देश को देने का उसने शपत खाया था। (यहोशू 1:6,7,9)

जो भी व्यक्ति परमेश्वर के लिए कुछ करना चाहता है उसे यह आवाज़ कई बार नियमित आधार सुनना पड़ेगा कि "डर मत।"

ऐलिज़ाबेत यिल्यिट, (जिनका पति चार धर्मप्रचारको सहित यूकेडोर के जंगलो मे मारा गया था) वे कहती है कि उनका जीवन भय के नियंत्रण में था। जब कभी वह कदम बढाना चाहती थी तब भय उन्हे रोकता था। एक दिन उनकी सहेली ने कहा कि तुम भय खाते हुए भी कदम बढ़ाओ। यह सुनने के बाद उन्होंने भय से छुटकारा पाया और बाद में ऐलिज़ाबेत और रेचल सेन्ट जिनका धर्मप्रचारक भाई भी मारा गया था, दोनों मिलकर इण्डियन प्रजाति (जिन्होंने उनके पति और भाई की हत्या किया था) के लोगों को सुसमाचार प्रकट करने गए।

कई बार हम वही करना चाहते हैं जिन्हें करने से हमें भय नहीं होता। लेकिन ऐसे करने से हम परमेश्वर व दूसरे लोगों और अपने लिए बहुत ही कम सिद्ध कर सकते हैं। अब्राम और यहोशू दोनो से परमेश्वर ने वही करने को कहा जिस से वे डरते थे।

भय के बारे में अन्य विषय दिखाने से पहले परमेश्वर ने मुझे ऐलिज़ाबेत की कहानी याद दिलाई।

"डरो मत" का अर्थ है "भागो मत"

...डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा,...

निर्गमन 14:13

मैने यह जाना कि परमेश्वर जब कहता है "डरो मत" तो उस वाक्यखण्ड का अर्थ है "भागो मत।" तो भय का सामना भी काफी आसान है। जब हम घबराये और डरे हुए होते हैं तब डरकर भय के सामने झुकने से तो अच्छा है डट कर उसका सामना करना, चाहे हम भयभीत ही क्यों न हो।

यहि कहता है परमेश्वर हमसे, उसके वचन मे। चाहे हमारे घुटने अस्थिर हो या मुँह सूख रहा हो, या हम कमज़ोर होकर नीचे गिरने वाले हैं तो हमें कहना चाहिए कि "प्रभु शक्ति दीजिए क्योंकि, यह आपकी इच्छा है और आप चाहते हैं कि मैं ये करूँ। मैं निश्चिंत हूँ कि मेरा जीवन भय के नियंत्रण में नही है लेकिन आपके वचन के नियंत्रण मे रहे।"

परमेश्वर के वचन के द्वारा भय का सामना

भय को हम टाल नही सकते या उस से छिप नही सकते केवल निडर होकर परमेश्वर के वचन के द्वारा उसका सामना कर सकते हैं।

कई बार प्रार्थना के कारण लोग डर से आश्चर्यपूर्वक छुटकारा पाते हैं। इस में कोई संदेह नही क्योकि हम अदभुतकारी परमेश्वर कि सेवा करते हैं। कई बार मैंने लोगों के लिए प्रार्थना किया है भय से छुटकारा पाने के लिए और उन्होने कहा कि मेरे प्रार्थना करने के बाद उन्हें कोई

भय नही रहा। कई बार हम परमेश्वर के वचन पढ़ने और ध्यान करने और भय का सामना दृढ़ता से करने के कारण भय से छुटकारा पा सकते हैं।

मेरे व्यक्तिगत जीवन में कई परेशानियाँ थी, जो बचपन से मेरे साथ थी और इनसे छुटकारा पाना ज़रूरी था। परमेश्वर ने मुझे उन सबसे छुटकारा दिया क्योंकि मैं उसके वचन पर अवंलंबित थी। परमेश्वर हमेशा हमें कठिन चीजों सें छुटकारा नही देता परन्तु "उनके द्वारा" हमें चलना सिखाता है।

भय झूठा है

> ...शैतान...आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं; जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का पिता है।
>
> यूहन्ना 8:44

बाइबल नहीं कहता कि "काँपो मत" या "हिलो मत" लेकिन कहता हैं "डरो मत।"

इस में एक अंतर है।

इस सिलसिले मे डर का अर्थ है भागना या फरार होना। जैसा कि ऐलिज़ाबेत यिल्यिट की सहेली ने कहा डर के कारण भागने से तो अच्छा है कि हम वही करे जिस के कारण हमे डर लगता है।

अग्रेंज़ी में "F-E-A-R" (भय) का अर्थ इस प्रकार से कहा जा सकता है "गलत सबूत का सच दिखना।"

यीशु ने कहा शैतान झूठा है और सभी झूठो का पिता है। उसमे कोई

सत्य नही है। वह हमेशा झूठे डर को दिखाकर परमेश्वर के लोगों को धोखा देता है ताकि वे परमेश्वर की आज्ञा न माने और इस कारण उसके द्वारा नियोजित आशिषो को प्राप्त न कर सकें।

कई बार हम इतना डर जाते है सोचकर कि जिस विषय के बारे में हम सोचते हें वह विषय बहुत छोटा हो जाता है हमारे डर के सामने। यदि हम दृढ़ता से और निडरता से भय का सामना करेंगे तो हम देखेंगे कि वह इतना डरावना या कठिन नही है जितना हम समझते है।

सारे बाइबल में हम देखते है कि परमेश्वर बार–बार अपने लोगों से कहता है "डरो मत।" मैं समझती हूँ कि परमेश्वर ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि परमेश्वर नही चाहता कि उसके लोग शैतान द्वारा धोखा खाकर उसके द्वारा नियोजित आशिषों को न खो सकें!

परमेश्वर जानता है कि हम भयभीत हैं, इसी कारण वह हमें सावधान कर रहा है और साहस दे रहा है ताकि हम निडरता से आगे बढ़े और हमारे लिए नियोजित आशिषो का प्राप्त कर सकें!

जैसा कि हम देखते है अब्राम के जीवन में।

साहस और आज्ञापालन बहुत प्रतिफल उत्पन्न करते है

इन बातों के पश्चात् यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुँचा, "हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा प्रतिफल मैं हूँ।"

उत्पत्ति 15:1

जैसा कि हमने उत्पत्ति 12:1 में देखा परमेश्वर ने अब्राम को बड़ा आज्ञा दिया कि "अपने चीज़ें समेट कर सबको छोडकर, जिन्हें तुम जानते है, ऐसे जगह जाओ जो तुम्हे मैं बताऊँगा।"

यदि अब्राम डर कर घुटने टेकता तो यह कहानी कभी पूरी नही होती। वह कभी भी परमेश्वर को अपने सुरक्षा का ढाल अपनी पारितोषिक और अत्यन्त प्रतिफल के रूप में नहीं जान पाता।

इसी प्रकार, यदि यहोशु अपने भय पर विजयी न होता तो वह परमेश्वर के आज्ञानुसार उसके लोगों को परमेश्वर द्वारा प्रमाणित देश में न ले जाता और न ही वे लोग परमेश्वर द्वारा नियोजित आशिषो को प्राप्त कर पाते।

परमेश्वर के वचन में सामर्थ्य है जिस कारण हम शैतान के इच्छओं के सामने घुटने न ठेक कर परमेश्वर जो चाहता है वह कर सकते है। चाहे वह डर कर ही क्यों न हो।

2

सभी विषयों के लिए प्रार्थना करे और किसी से न डरें!

धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।

याकूब 5:16

2

सभी विषयों के लिए प्रार्थना करे और किसी से न डरें!

काफी समय पहले जब में एक नये नाई के पास जा रही थी तब मुझे डर था कि शायद वह ठीक से मेरे बाल न कॉट पायेगी। तब परमेश्वर ने मुझ से कहा, "सभी विषयो के लिए प्रार्थना करो और किसी के लिए मत डरो ।"

पवित्र आत्मा ने मुझ से कहा कि, "डरो मत, प्रार्थना करो ताकि परमेश्वर इस औरत (नाई) को अगुवाई दे ताकि वह ठीक से काम कर सकें ।"

उसके बाद कई हफ्तों तक वह मुझे प्रार्थना और भय के बीच का अन्तर बताता रहा। कई बार भय मेरे जीवन मे प्रवेश कर परेशान करता था। प्रभु मुझे बताया कि संकट चाहे कितना ही बड़ा हो या छोटा, गम्भीर हो या सामान्य इन सबका एक ही उपाय है, वह है प्रार्थना।

मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ, मैं तुझे ढृढ करूँगा, और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा।

क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा दाहिना हाथ पकड़कर कहूँगा, "मत डर मैं तेरी सहायता करूँगा।"

यशायाह 41:10,13

इस वचन मे, परमेश्वर अपने लोगो से कहता है कि वे घबराए नही और डर कर इधर-उधर न देखे, क्योंकि वह उनके संग है।

कई बार हम अपने परिस्थितियों को देखकर घबरा जाते है। जो कि गलत है। जितना हम इन परिस्थितियों की तरफ ध्यान देते है, उतना ही हम डरते और घबराते है। इसलिए हम अपना ध्यान और दृष्टि परमेश्वर कि तरफ रखना चाहिए। परमेश्वर हमारे सभी परिस्थितियों और परेशानियों को सम्भाल सकता है।

परमेश्वर ने हमे अपने परेशानियों में पकडे रखने, प्रोत्साहित करने और साथ देने का वाकृदान किया है। परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम भयभीत न हो, वह हमें डरने से मना नही कर रहा है बाल्कि डर हमें नियंत्रित न करें इसलिए सावधान रहने को कह रहा है।

परमेश्वर आप से और मुझसे व्यक्तिगत रूप से कह रहा है "डरो मत, मै तुम्हारी सहायता करूँगा।" लेकिन हम परमेश्वर की शक्ति का तब तक अनुभव नही कर सकते जब तक हम उसकी आज्ञा मान कर विश्वास के साथ कदम न बढ़ाये।

क्या आप जानते है कि मैने परमेश्वर के अभिषेक का अनुभव कब पाया? *जब* में लोगों के सामने ठहर कर उपदेश देने लगी-उससे पहले नही बल्कि जब मैने विश्वास के साथ कदम बढ़ाया।

परमेश्वर, आज हमसे कह रहा है, "भय को तुमहारे जीवन को नियंत्रित करने मत दो। जो मैं कह रहा हूँ करो, क्योंकि जो मैं कह रहा हूँ उसी में तुम्हारी भलाई है और यह शैतान भी जानता है। यही कारण है कि वह बार बार तुम्हें डराते रहता है और इसी कारण मैं तुम्हें निडर रहने को कहता हूँ।"

डरो मत, तुम मेरे हो!

> ...तेरा रचनेवाला, और हे याकूब, तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है; मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है।
>
> जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूँगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आँच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।
>
> यशायाह 43:1,2

यहाँ पर परमेश्वर हमें निडर रहने को कह रहा है चाहे हम किसी भी तरह कि परेशानियों में रहे। इसका अर्थ है कि हम अपने जीवन में विजय प्राप्त कर सकेंगे लेकिन केवल जब हम इन परिस्थितियों के द्वारा हो गुज़रेंगे और यदि हम इन परेशानियों से दूर न भागे।

परमेश्वर ने हमे वाकदान दिया है कि यदि हम नदि से भी गुज़रे तो वह हमें सुरक्षित रखेगा और यदि आग से गुज़रे तो वह हमें जला न पाएगी।

क्या आप को उन तीन इब्रानियों की कहानी याद है जिनका नाम था शद्रक, मेशक और अबेदनेगो? जो जलते हुए आग के भट्ठे मे डाले गये थे लेकिन वे बिना किसी हानि के बाहर आये। उन पर आग का कुछ भी प्रभाव न हुआ और ना ही उन में जलने की गन्ध पाई गई। (दानिय्येल 3:1-30)

भय बहुत ही गम्भीर हो सकता है—जैसे कि आग कि भट्ठी में डाला जाने जैसा और इतना छोटा भी हो सकता है कि हमारे बाल अच्ची नही दिखने का डर।

हमारा भय चाहे गम्भीर हो जैसे कि कैंसर की बीमारी, दिल का दौरा या हमारे किसी प्रिय व्यक्ति के मरजाने की चिंता या हमारा भय चाहे छोटा हो जैसे कि बारिश के कारण उद्यानभोज में रूकावट आना या फिर पार्किंग कि जगह नही पाना।

भय चाहे कितना भी छोटा या बडा हो भय-भय है और हमें इस से ठीक से निपटना चाहिए। जैसा कि हमने देखा भय का सामना हमें परमेश्वर के वचन के साथ करना चाहिए। जब हम प्रार्थना करते है तो हमे विशवास के साथ करना चाहिए। डर हमारा शत्रु है इसलिए उससे हमे ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए।

विश्वासः भय का विषहर

पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से

माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।

पर विशवास से माँगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है।

ऐसा मनुष्य यह न समझे कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा।

याकूब 1:5-7

केवल विशवास ही डर का विषहर है।

यदि आप या मैं विष (ज़हर) पी ले तो हमें एक विषहर (दवाई) पीना चाहिए ताकि हम बच सके वरना हमे बहुत हानि होगी और शायद हम मर भी सकते है। यह डर जैसे घातक विष के विषय में (सच) सही है। इसी प्रकार डर नामक विष का विषहर है विश्वास।

जब डर हमारे दरवाज़े पर दस्तक देता है तो हमें विश्वास के साथ उसका सामना करना चाहिए क्योंकि इसका कोई और हल नही है और प्रार्थना एक गाड़ी है जो विश्वास को ढ़ोता है।

विश्वास को परेशानी के पास ले जाना चाहिए। विश्वास रहित प्रार्थना करना सम्भव है (जैसा कि हम कई बार करते है), लेकिन भरपूर विश्वास रहकर प्रार्थना न करना असम्भव है।

याकूब कहता है कि जब हमें किसी चीज की ज़रूरत हो तो हमें विशवास के साथ *सरल प्रार्थना* कर उसे परमेश्वर से माँगना चाहिए। यह

दोनों शब्द बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमें इस विश्वास के साथ प्रार्थना करना चाहिए कि जो हम माँग रहे है वह हम परमेश्वर के इच्छानुसार ज़रूर पायेगे।

भय से छुटकारा पाने का हल सरल है। वह है—सरल, विश्वासपूर्ण, *निरन्तर* प्रार्थना करना।

हर समय प्रार्थना करना!

> हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो।
>
> इफिसियों 6:18

इफिसियों 6:10-17 में प्रेरित पौलुस परमेश्वर के कवच के बारे में बताता है कि हम इसका प्रयोग कैसे करें हमारे अत्मिक युद्ध में। युद्ध संबन्धी सारे हथियारों का विवरण करने के बाद प्रेरित पौलुस 18 वचन में कहता है अपने उपदेश का सांराश देते हुए कि, "हर समय प्रार्थना करो..."

हमें कितने बार प्रार्थना करना है?

हर समय।

हमें किस प्रकार प्रार्थना करना चाहिए?

हर प्रकार से, आत्मा में प्रार्थना करना चाहिए।

अगले अध्याय में हम अनेक प्रकार के प्रार्थना करना देखेंगे। अभी "हर समय प्रार्थना करना" देखेंगे।

इसका क्या अर्थ है ? क्या इसका अर्थ यह है कि जब हम सब्ज़ी खरीदने जाते और यदि परमेश्वर हमे प्रार्थना का बोझ दे तो हम सब कुछ छोडकर, घुटने टेककर प्रार्थना करने लगे ?

मै कई बार अपने पलंग के पास घुटने टेककर प्रार्थना करती हूँ। कभी - कभी जब परमेश्वर मुझे बोझ देता है तब मैं ज़मीन की तरफ झुक कर प्रार्थना करती हूँ। हमें प्रार्थना करने और आसन (अवस्था) में भ्रम नही होना है। हम चलते-चलते भी मन में चुप-चाप प्रार्थना कर सकते हैं।

हमारे जीवन के अलग-अलग मोड पर हम अलग-अलग तरीके से प्रार्थन करते है। उदाहरण-एक जवान माँ जिस के तीन-चार छोटे बच्चे हैं और एक बूढी नानी माँ जिसके बच्चे बड़े होकर घर से निकल गये, इन दोनों के प्रार्थना करने में अन्तर रहता है।

यदि हम अधिक धार्मिक होकर किसी न किसी प्रकार प्रार्थना करना चाहते है क्योंकि दूसरे लोग ऐसा करते है तो हम दण्ड के आभारी हो जाते है। प्रार्थना करने में महत्वर्पूण विषय यह है कि हम कब, कैसे, किस आसान में प्रार्थना करते है यह नही लेकिन विश्वास के साथ— हर समय, निरन्तर प्रार्थना करे। जब कभी प्रार्थना की अवश्यकता पड़े या मन में विचार आये तो प्रार्थना कीजिये!

निरन्तर प्रार्थना कीजिए

निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो।

1 थिस्सलुनीकियों 5:17

यह वचन पढ़ने के बाद मुझे कई बार विस्मय हुआ और मैं सोचती थी कि किस प्रकार मैं निरन्तर प्रार्थना कर सकूँगी? मेरे अनुसार निरन्तर प्रार्थना करने का अर्थ था बिना रूके लगातार प्रार्थना करना।

मुझे यह संम्भव नही लगता था।

अब मैने इसका बेहतर अर्थ जान लिया है जो कि प्रेरित पौलुस कह रहा था। निरन्तर प्रार्थना करने का अर्थ है जिस प्रकार हम निरन्तर श्वास लेते, लगातार लेकिन कई बार ध्यान न देते हुए भी।

आप और मैं श्वास लेने के द्वारा जीवित हैं जिस प्रकार हमारे शरीर को श्वास की जरूरत है, उसी प्रकार हमारे आत्मिक शरीर प्रार्थना रूपी श्वास के लिए बनाये गए हैं।

काफी धार्मिक होने के कारण यदि ज़्यादा समय प्रार्थना न कर सके तो हम सोंचते हैं कि हम कुछ चूक रहे हैं। प्रार्थना के विषय मे हम नित्यकर्मी हो गए है।

हम किस प्रकार प्रार्थना करें इसे सिखाने के लिए प्रभु ने मुझे यह उदाहरण दिया है जिस प्रकार जीवित रहने के लिए हमारा श्वास लेना जरूरी है उसी प्रकार हमें लगातार प्रार्थना भी करना चाहिए। चाहे कई बार ध्यान न देते हुए भी क्यों ना हो।

मैं कभी भी अपने साथ घड़ी लेकर नही गई ताकि वह मुझे याद दिलाये कि मैं कब श्वास लूँ या किसी भी दिन मैंने किताब में नही लिखा कि कितने बार मैंने श्वास लिया है। फिर भी मैं दिन भर श्वास लेति हूँ लगातार और निरन्तर बिना ज्यादा ध्यान दिए।

इसी तरह हमें प्रार्थना भी करना चाहिए।

मुझे मालुम नहीं मैं कितने बार प्रार्थना करती हूँ, दिनबर प्रार्थना करती हूँ सुबह नींद से जागने से रात में सोते समय तक। कई बार मुझे खास रूप से प्रार्थना करने में आनंद लेती हूँ और दिनभर प्रार्थना करने में बि आनंद लेती हूँ।

क्या इसका मतलब यह हुआ कि मैं कुछ और नही करती? मैं काफी दूसरे काम भी करती हूँ। जब हम विभिन्न प्रकार से प्रार्थना करना देखेंगे तो हम यह जानेंगे कि हमें हर समय और हर संदर्भ में प्रार्थना करना चाहिए। और परमेश्वर इन प्रार्थनाओं को ज़रूर सुनेगा क्योंकि यह प्रार्थनायें उतना ही सामर्थी और महत्वर्पूण है जितना कि दूसरे प्रार्थनाये जो हम करते है।

क्या आप जानते हैं कि क्यों विरोधी (शैतान) चाहता है कि हम अपने प्रार्थना जीवन के बारें में संतुष्ट न रहे? क्योंकि वह जानता है कि यदि हम अपने प्रार्थना जीवन से संतुष्ट नही है तो हम शायद मजबूरी की तरह प्रार्थना करेंगे जिसके कारण हम विश्वास के साथ प्रार्थना न कर सकेंगे और इस कारण प्रार्थना करने के उपरान्त भी खुश नहीं रह सकते।

प्रार्थना के सिद्धान्त

पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।
प्रेरितों के काम 3:1

कई लोग अपने प्रार्थना जीवन से असंतुष्ट रहते है। उन्हें इस प्रकार नही रहना चाहिए क्योंकि हर व्यक्ति का व्यक्तिगत प्रार्थना समय रहना चाहिए और यह ज़रूरी नहीं कि वह दूसरे लोगों जैसा हो।

हाँ, प्रार्थना करने के लिए नियमित सिद्धांत जरूरी है जिनका आचरण करना चाहिए। प्रार्थना के विषय में एक नियमित समय और स्थान का होना भी ज़रूरी है।

नये नियम में हम पढ़ते है कि प्रभु यीशु के शिष्य हर दिन कुछ नियमित समय मे एक निश्चित स्थान में जाकर प्रार्थना करते थे। यह एक अच्छा सिद्धांत था। यह सिद्धांत हमारे जीवन में भी प्रार्थना समय का आरम्भ होना चाहिए, न कि अन्त।

हमें भी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस प्रकार का एक निश्चित और निर्धारित प्रणालि बनाना चहिए और दृढ़ता के साथ उसका पालन करना चाहिए तब तक, जब तक वह हमारे जीवन का अंग न बन जाये।

एक समय था जब मुझे दाँत मांजने की आदत करनी पडी, उसके बाद से आज तक फिर मुझे सोचने की ज़रूरत नही पड़ी, सुबह उठने पर और रात को सोने से पहले मै रोज अपने दाँत मांजती हूँ। और मुझे यह याद रखने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह जीवन का भाग बन गया है।

इसी प्रकर जब हम प्रभु के साथ चलना शुरू करते हैं तो हमें कई विषयों में अपने आप को नियंत्रित करना पड़ता है क्योंकि हम कमज़ोर होते है कई विषयों में लेकिन बाद में यह नियंत्रण हमारे जीवन का अंग बन जाते है।

मुझे विश्वास है यदि पवित्र आत्मा को अपने जीवन में कार्य करने देंगे तो वह हमें निरन्तर प्रार्थना करना सिखाएँगा, जो हमारे श्वास लेने जैसा होगा। और जब हम यह सीखेंगे तब हम निरन्तर प्रार्थना कर सकेंगे।

जब नींद से जागने पर हम कहेंगे, "सुप्रभात प्रभुजी, मैं आप से प्रेम करता हूँ।" जब खाने के लिए मेज़ पर बैठेंगे तो कहेंगे "पिताजी, आप

कितने अच्छे है।" सफर करते समय हम कहेंगे "धन्यावाद परमेश्वर, आपने कितने आशिष और सुविधाए दिये है।"

सुबह-शाम हर समय हम परमेश्वर के साथ बातचीत कर सकेंगे और हमेशा परमेश्वर की स्तुति-प्रशंसा कर पायेंगे। हमारे साथ रहने के लिए धन्यवाद देते हुए और हर प्रश्न का उत्तर हम उनसे पूछ सकते है यदि हम ऐसा करेंगे तो हम रात को सोने से पहले परमेश्वर का धन्यवाद दे सकते है दिनभर हमे दिए गए आशीषों के लिए और सोने से पहले सुखमय व शान्तिर्पूण नीन्द के लिए प्रार्थना कर सकेंगे।

अब शैतान फिर हम से कहेगा कि हम ठीक से प्रार्थना नही कर रहे हैं क्योंकि हम ठीक स्थिति या आसन में नही है। या हम प्रार्थना मे धार्मिक शब्दों का उपयोग नही कर रहे हैं। यही समय है शैतान को भगानें का क्योंकि प्रार्थना किसी आसन, स्थिति पर निर्भर नही करता बल्कि वह हमारे आत्मा, मन और हृदय पर निर्भर करता है। ना कि धार्मिक शब्दों या आसन में।

जहाँ प्रार्थना होता है वहाँ सामर्थ्य होता है !

प्रार्थना ही शक्ति है!

...धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव मे बहुत कुछ हो सकता है ।

याकूब 5:16

सरल, विश्वासपूर्ण प्रार्थना बहुत शक्तिर्पूण होता है। सच्चे हृदय से कि गई निरन्तर प्रर्थना से बढ़कर और कोई शक्ति नही है !

शैतान हमें इसलिए यातना देता और परेशान करता है क्योंकि वह चाहता है कि हम कमज़ोर रहे। वह जानता है कि निरन्तर विश्वासपूर्ण प्रार्थना उसके कामों को नकाम करेगा और परमेश्वर की इच्छा पूरी होने में सहायता करेगा।

जब कभी हम अपने प्रार्थना जीवन से असंतुष्ट होते हैं, तो हम अपने विश्वास में कमज़ोर पड जाते हैं ।

यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर की इच्छा और सकंल्प हमारे जीवन में पूरा हो तो हमें यह विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर हमारे प्रार्थनाओं को सुनता और उत्तर भी देता है। यही कारण है कि हमारा प्रार्थना में बहुत ही शक्ति और सामर्थ रहता है।

इस कारण हमें निडर होकर निरन्तर विश्वासपूर्ण प्रार्थना करना चाहिए। विश्वास के साथ सभी तरह के प्रार्थनायें !

3

प्रार्थना के प्रकार

अब मैं सब से पहले यह आग्रह करता उपदेश देता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किए जाएँ।

1 तीमुथियुस 2:1

3

प्रार्थना के प्रकार

अब मैं सब से पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती और प्रर्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किए जाएँ। राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ। यह हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है।

1 तीमुथियुस 2:1-3

जैसा कि हम उपर्युक्त वचन में देखते हैं, हमें अपने लिए और दूसरों के लिए हर प्रकार के प्रार्थनाएँ करना चाहिए।

आगे हम हृदयपूर्ण और निरन्तर से करने के लिए प्रार्थना के अनेक प्रकार देखेंगे।

समर्पण प्रार्थना

अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख,
वही पूरा करेगा।

भजन संहिता 37:5

पहला है समर्पणयुक्त प्रार्थना जिस के अनुसार हम अपने आपको और अपने जीवन को प्रभु के हाथों में सौंपते हैं। यह हम तभी कर सकते है जब आपने सारी चिन्ता और बोझ उस पर डाल सकते है। जैसा कि 1 पतरस 5:7 में कहा गया है, "अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है।"

जब हम डर और परेशानियों से घेरे जाते हैं और जब वे हमें कुचलते हैं तब प्रार्थना करना चाहिए कि प्रभु, "मैं यह बोझ आपकी सेवा करने से रोक रहा है।"

मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे शक्ति और सामर्थ्य दे ताकि आप जो भी चाहे वह मैं कर सकूँ चाहे डर कर ही क्यों न हो।

इस परेशानी और परिस्थिति को मैं आपको सौंपता हूँ। विरोधी (शैतान) जो कुछ भी बुराई को दिखा कर मुझे रोकने की, कोशिश कर रहा है उसे भी मैं आपके हाथों में सौंपता हूँ। जो कुछ भी हो उसका आप ही ज़िम्मेदार है मैं नही। मैं वही करूँगा, जो आप चाहते हैं।

जैसे ही हमारे हृदय मे डर उत्पन्न होता है तभी यदि हम प्रार्थना करेंगे तो जल्दी ही हम परमेश्वर की शक्ति से उस से छुटकारा पा सकते है।

कई बार हमें ज्यादा परेशान करने वाली परिस्थितियाँ बड़ी नहीं होती है लेकिन श्रेष्ठगीत 2:15 में वर्णित छोटे लोमड़ियों की तरह

छोटे–छोटे परेशनियाँ भी हमें दिन रात पीड़ा देती है और हमारे शांति और आंनद को छीन लेती है।

इसलिए, भय चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो जैसे ही हमें डर लगता है हमें प्रार्थना करना चाहिए कि "प्रभु मैं भय में जीना नही चाहता इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ और इस परिस्थिति को आपके हाथों मे सोंपता हूँ भय मुझे यातना दे रहा है और मेरे जीवन में आपके इच्छा होने से रोकने की कोशिश कर रहा है।"

यदि हम इस प्रकार सच्चे और यथार्त हृदय मे प्रार्थना करेंगे तो परमेश्वर हमारे प्रार्थना को ज़रूर सुनेगा और वह हमे इस परेशानी से मुक्ति दिलाएगा।

प्रतिष्ठापूर्ण प्रार्थना

> इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ यही तुम्हारी अत्मिक सेवा है।
>
> रोमियों 12:1

यदि हम परमेश्वर को कुछ दे सकते है प्रार्थना मे तो वह है प्रतिष्ठार्पूण प्रार्थना, जैसे हम प्रार्थना करते है कि, "प्रभुजी, मैं आपको अपना समय, पैसा, ध्यान और सब कुछ देता हूँ।"

प्रेरित पौलुस उपर्युक्त वचन में कहता है कि हमें अपने शरीरों को परमेश्वर के लिए प्रतिष्ठित, करना चाहिए। जो कि हमारा यर्थात् सेवा है।

जब हम बच्चों को प्रार्थना मे प्रतिष्ठित करते है, परमेश्वर को तो हम प्रार्थना करते है कि "हम उनको प्रभु की शिक्षा और चैतावनी देते हुए उनका पालण –पोषण करेंगे।" (इफिसियों 6:4)

जिस प्रकार हम अपने धन–सम्पत्ति, शरीर, मन और बच्चों को परमेश्वर के लिए प्रतिष्ठित करते हैं उसी प्रकार हमें अपने मुँह को भी प्रतिष्ठित करना चाहिए, जिसके बारे मे अगले पक्तियों मे देखेंगे ।

स्तुति और आराधनायुक्त प्रार्थना

> इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।
>
> इब्रानियों 13:15

मैं समझती हूँ हम सब स्तुति और आराधना जानते है।

स्तुति का अर्थ है परमेश्वर की अच्छाई का प्रशंसा करना। हमारे लिए जितने भी अच्छे काम किए हैं उनको याद करना।

आराधना का अर्थ है परमेश्वर की प्रशंसा करना। परमेश्वर की सामर्थ्य और शक्ति को जानकर उसकी प्रशंसा करना।

इसलिए इब्रनियों कि पुस्तक का लेखक कहता है कि हमें हर समय हर स्थिति मे परमेश्वर की अराधना करना चाहिए।

जैसे कि हमने देखा है, स्तुति और आराधना भीतर-बाहर क्षण प्रतिदिन रात-दिन साँस लेने के समान होना चाहिये ।

हमें लगातार प्रार्थनामय स्तुति हौर आराधना में परमेश्वर के नाम को सदा जानते, स्वीकार करते और महिमा करते हुए उसके प्रति धन्यवादी होना चाहिये ।

धन्यवाद की प्रार्थना

हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।

1 थिस्सलुनीकियों 5:18

1 थिस्सलुनीकियों 5:17 हमें निरन्तर प्रार्थना करने के लिए कहने के बाद प्रेरित पौलुस हमारी दृष्टि 18 वचन की तरफ मोडता है जिसके अनुसार हमें हर समय और परिस्थिति मे परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है।

जिस प्रकार प्रार्थना हमारे जीवन का अंग बन जाती है उसी प्रकार कृतज्ञता और धन्यवाद भी हमारे जीवन का अंग हो जाना चाहिए।

धन्यवाद देने का मतलब यह नही कि हम एक बार कहीं बैठकर सभी विषय याद करने के बाद हम प्रभु से कहे, "धन्यवाद, प्रभु जी।"

ऐसा करना धार्मिक्ता है, क्योंकि लोग सोचते है कि ऐसा परमेश्वर चाहता है।

सच्ची कृतज्ञता और धन्यवाद हृदय की गहराई से आता है जब हम प्रभु को जान लेते है कि वह कौन है और क्या करता है। यह वह नही है जो कुछ पाने के लिए, किसी कि ज़रूरत मिटाने के लिए या आशीष पाने की दृष्टि से किया जाता है।

परमेश्वर जिस प्रकार आराधना चाहता है वह है जो हमारे परमेश्वर का पवित्र आत्मा जो हमारे अंदर है उसके द्वारा परमेश्वर की स्तुति और प्रशंसा किए जाना।

सच्ची कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद वह है जैसा किर्तनाकार ने लिखा है, "जो प्रभुओं का प्रभु है, उसका धन्यवाद करो, उसकी करूणा सदा की है।" (भजन संहिता 136:3)!

आत्मपूर्ण प्रार्थना

पर हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में उन्नत्ति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए...

यहूदा 20

जैसा कि हमने पहले देखा इफिसियों 6:18 में हमे न सिर्फ निरन्तर और हर प्रकार के प्रार्थनाये करना है बल्कि उपयुक्त वचन के अनुसार "पवित्र आत्मापूर्ण" प्रार्थना करना चाहिए।

हमारे अन्दर स्थित पवित्र आत्मा हमें प्रार्थना करने के लिए प्रोत्सहित करता है और अगुवाई करता है। इसलिए हम पवित्र आत्मा को नाकारते हुए जैसे ही हमे अगुवाई मिले हमे प्रार्थना करना चाहिए। इस प्रकार हम हर परिस्थिति में निरन्तर और हर प्रकार के प्रार्थनायें कर सकेंगे।

हमारे लक्ष्य इस प्रकार रहना चाहिए "जब कभी मुझे पवित्र आत्म की अगुवई मालूम पडे मै प्रार्थना करूँगा," (एक पुराना आत्मीय गाना)।

जब हम यह जान लेते हैं कि हम कही भी कभी भी प्रार्थना कर सकेंगे तो हमे एक निश्चित समय या स्थान के लिए इंतज़ार नही करना पड़ेगा।

समझौतायुक्त प्रार्थना

फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी।

क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इक्ट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।

मत्ती 18:19,20

समझौते में शक्ति है।

बाइबल कहता है कि यदि परमेश्वर साथ में है तो एक व्यक्ति हज़ारों का पीछा करेगा, और उनके दस हज़ार को दो मनुष्य भगा देते (व्यवस्था विवरण 32:30) लेकिन यह शक्ति केवल उन्हीं लोगों के लिए है जो एक दूसरे से और परमेश्वर के समझौते में है।

हम एक दूसरे से लड-झगडकर और आवश्यकता पड़ने पर यदि समझौतायुक्त प्रार्थना करेंगे तो वह फलोत्पादक नही होगा। जैसा कि हम 1 पतरस 3:7 में पढ़ते हैं, "वैसे ही, हे पतियो, तुम भी बुद्विमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं। जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएँ रूक न जाए।"

यदि हम इसी प्रकार सारा सप्ताह उपदेशक के बारे में व्यर्थ गपशप करके ज़रूरत पडने पर जाकर यदि हम प्रार्थना करवायेंगे और हमारे साथ प्रार्थना में यदि समझौतापर्वक एक होने को कहेंगे तो वह लाभदायक नही होगा।

क्यों? क्योंकि हम पहले ही समझौते से बाहर हो गए है—एक दूसरे से और परमेश्वर के साथ।

आप जानते हैं क्यों परमेश्वर को समझौतायुक्त प्रार्थना पसन्द है? क्योंकि वह जानता है कि समझौते में रहना और चलना बहुत ही चुनौती भरा विषय है। इसलिए जो कोई ऐसा करता है परमेश्वर उनका सम्मान करता है।

यदि हम एक-दूसरे से और परमेश्वर से समझौते में आते है, तो हमारे प्रार्थनाओ में अधिक शक्ति रहता है, जो उन्हे प्रभावशाली बना देता है।

एकतायुक्त प्रार्थना

ये सब...एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे।

प्रेरितों 1:14

एकतायुक्त प्रार्थना में बहुत शक्ति है, जैसा कि उपयुक्त वचन में हम देखते है यह समझौतायुक्त प्रार्थना है।

सारे प्रेरितों के काम पुस्तक में हम देखते है कि परमेश्वर के जन "एक मन होकर" प्रार्थना किया करते थे। (प्रेरितों 2:1,46; 4:24, 5:12,15:25)

फिलिप्पियों 2:2 में हम पढ़ते है जैसा प्रेरित पौलुस ने कहा, "तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रख और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो।"

यदि हम इस वचन के अनुसार एक मन होकर, एक ही चित्त और मनसा रखेंगे आपस में और परमेश्वर के साथ तो हम पहली शताब्दी के शिष्यों की तरह शक्तिशाली प्रभाव देख सकते हैं।

विनतीयुक्त प्रार्थना

अब मैं सब से पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती और प्रार्थना और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाएं।

1 तीमुथियुस 2:1

विनतीयुक्त प्रार्थना का अर्थ है किसी मनुष्य के लिए उसके और परमेश्वर के मध्य में ठहर कर विनति करना।

रोमियों 8:26,27 में प्रेरित पौलुस कहता है कि पवित्र आत्मा हमारे लिए परमेश्वर से उसकी इच्छानुसार विनती करता है।

इब्रनियों 7:25 में पढ़ते हैं "प्रभु यीशु मसीह हमारे लिए परमेश्वर से सर्वदा विज्ञापन (अनुरोध) कर रहा है।"

अन्त मे, पौलुस कहता है 1 तीमुथियुस 2:1 में "सब मनुष्यों" के लिये विनती किए जाएँ। इसका अर्थ है कि हमें सभी मनुष्यों के लिए हर जगह हमेशा प्रार्थना करना चाहिए।

इस पृथ्वी पर प्रभु यीशु मसीह के लिए किए जाने वाली सेवकाई में विनतियुक्त प्रार्थना बहुती महत्वर्पूण है।

मौन प्रार्थना

...यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है, समस्त पृथ्वी उसके सामने शान्त रहे।

हबक्कूक 2:20

इस प्रार्थना को "प्रभु के लिए प्रतीक्षा" करने वाली भी कहा जा सकता है।

दाऊद परमेश्वर के लिए प्रतीक्षा करना जानता था। जैसा कि हम देखते है दाऊद रचित भजन संहिता 27:4 में "एक वर मैंने यहोवा से माँगा है, उसी के यत्न में लगा रहूँगा, कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ, जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ। और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूँ।"

प्रभु के लिए प्रतीक्षा करना बहुत ही ज़रूरी है क्योंकि बहुत से लोग जानते नही कि यह प्रार्थना का एक बहुत ही महत्वर्पूण अंश है।

प्रार्थना का अर्थ केवल प्रार्थना करना ही नही बल्कि प्रभु के लिए प्रार्थना में प्रतीक्षा करना है। प्रार्थना का अर्थ प्रभु से हमेशा बातचीत करना ही नही बल्कि उसकी आवाज़ सुनना भी है।

निवेदनयुक्त प्रार्थना

> किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।
>
> फिलिप्पियों 4:6

निवेदन का अर्थ है हमारे ज़रूरतो के लिए प्रार्थना करना और परमेश्वर को उन्हें पूरा करने के लिए कहना।

मैं अक्सर कहती हूँ कि सबसे महान प्रार्थना है "मेरी सहायता करो"

प्रार्थना। "सहायता कीजिए प्रभु जी, सहायता कीजिए, मेरी सहायता कीजिए, मेरी सहायता कीजिए!"

मैं यह प्रार्थना कई बार करती हूँ।

कभी कभी मैं मध्यरात्री को बाथरुम जाने के लिये उठ जाता हूँ और इसमें कुछ भी गलत नहीं है; फिर भी मैं स्वयं को यह प्रार्थना करते हुए पाता हूँ, "क्हे परमेश्वर, मेरी सहायता कर, मेरी सहाता कर!"

"मैं मानती हूँ कि मैं पवित्र आत्मा द्वारा इस प्रकार प्रार्थना करने के लिए चलाई जा रही हूँ।"

"मेरी सहायता करो प्रभु!" यह बहुत ही प्रभावशाली प्रार्थना है। यदि हमें करने को कुछ नही है तो हम इस प्रकार प्रार्थना कर सकते हैं।

और एक महत्वर्पूण प्रार्थना है वह है "प्रभु जी मुझे आपकी ज़रूरत है।"

यदि हम सब कुछ छोडकर इस प्रकार प्रार्थना करेंगे तो हम हमारे जीवन में काफी बदलाव देख सकते हैं।

नीतिवचन 3:5-7 कहता है, "तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सर्म्पूण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा। अपनी दृष्टि में बुद्विमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना।"

सब प्रयत्न करने के बाद जब हम यह जान लेते हैं कि अब कोई आशा नहीं हैं तब परमेश्वर के पास जाने से तो अच्छा है, पहले ही कुछ कोशिश किये बिन हमे परमेश्वर के पास जाना चाहिए। केवल परमेश्वर पर निर्भर होना चाहिए।

हमें इस तरह से प्रार्थना करना चाहिए कि, "प्रभु जी, मैं यह नही कर पाऊँगा लेकिन आप जरूर कर सकते है। आप मेरे द्वारा यह कीजिए, मैं आप पर विशवास रखता हूँ और आप पर निर्भर हूँ। मेरी सहायता कीजिए क्योंकि मुझे आपकी ज़रूरत है।"

इस तरह की छोटी सी प्रार्थना भी हमारे जीवन के बड़े-बड़े समस्याओं के लिए काफ़ी है।

परमेश्वर को मान लेने के लिए हमें सिर्फ थोडे ही क्षण चाहिए लेकिन ऐसा करने से हमें जीवन के बड़े–बड़े असफलताओं से छुटकारा मिल सकता है, विशेषकर जब हम जान लेते हैं कि हम परमेश्वर के बिना कुछ नहीं कर सकते।

जब हम कहते है कि "प्रभु जी मैं आप पर निर्भर हूँ, मेरी सहायता कीजिए" तो हम निवेदनयुक्त प्रार्थना कर रहे हैं जिसमें शक्ति है। निवेदनयुक्त प्रार्थना मे हम अपने ज़रूरतों और इच्छओं के लिए भी प्रार्थना कर सकते है । हमारे हर ज़रूरतो और विषयों के बारे मे प्रभु से बातचीत करने में हमे कोई हिचकिचाहट नही होना चाहिए। हमे यह जानना चाहिए कि परमेश्वर हम से बहुत प्रेम करता है और हमें जिस विषय से चिंता है वह भी उनका ध्यान रखता है।

पहले विषयो को पहले रखें!

जब वे जा रहे थे, तो वह एक गाँव में गया, और मार्था नामक एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा।

मरियम नामक उसकी एक बहिन थी। वह प्रभु के चरणों में बैठकर उसका वचन सुनरही थी।

परन्तु मार्था सेवा करते करते घबरा गई, और उसके पास आकर कहने लगी, हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी चिन्ता नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है?

इसलिये उससे कह कि मेरी सहायता करे। प्रभु ने उसे उत्तर दिया, मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात आवश्यक है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है जो उससे छीना न जाएगा।

लूका 10:38-42

अब तक आप यह जान सके होगे कि आपने जितना सोचा उस से बेहतर प्रार्थना जीवन व्यतीत कर सकते हैं। और आप यह भी जान गए होंगे कि किसी निश्चित समय में प्रार्थना करना तो ठीक है लेकिन हमेशा प्रार्थना में जुटे रहना बहुत ही प्रभावशाली है।

प्रभावशाली और फलोत्पादक प्रार्थना जीवन पाने का रहस्य है परमेश्वर की उपस्थित में समय व्यतीत करना। यीशु मसीह के शिष्य होने के नाते हमारे जीवन मे प्रार्थना केन्द्रित होना चाहिए।

यदि हम अपने दिन का काम शुरू करने से पहले प्रभु कि उपस्थिति में समय बिताएगें और दिनभर भी उसकी उपस्थिति का अनुभव पाएगे तो हम दिन भर अद्‌भुत परिणामो को देख सकते हैं।

यदि आप सोचते है कि आपके पास समय की कमी है तो यह याद रखिए "जितना मैं व्यस्त रहूँगा काम में, उतना ज्यादा समय परमेश्वर की उपस्थिति में बिताना पड़ेगा," क्योंकि जितना मैं ज्यादा काम करूँगा उतना ही मुझे उसकी सहायता की ज़रूरत पडेगी।

यादि, मार्था की तरह, हम भी प्रभु से समय बिताने के लिये बहुत व्यस्त है, तो हम सिर्फ बहुत वयस्त है। हमें मरियम की तरह प्रभु के चरणों में बैठकर छोटे विषयो को ध्यान न देते हुए हमारी दृष्टि प्रभु की तरफ बड़े चीजो को सीखना चाहिए।

यदि आप ऐसा करेंगे, तो आप उनसे राज्य प्राप्त करने की कुंजियाँ प्राप्त कर सकेंगे।

4

स्वर्गीय राज्य की कुंजियाँ

मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा।

मत्ती 16:19

4

स्वर्गीय राज्य की कुंजियाँ

यीशु कैसरिया, फिलिप्पी के प्रदेश में आया, और अपने चेलों से पूछने लगा, लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं? उन्होंने कहा, "कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं, और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते है।" उसने उनसे कहा परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।

मत्ती 16:13-16

जब पतरस ने कहा यीशु, मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र तो वह उसके हृदय में स्थित विश्वास को प्रकट कर रहा था।

हमारे हृदय मे छिपे विशवास को हम अपने मुँह के द्वारा प्रकट करते है। जैसा कि हम पढ़ते है रोमियों 10:10 में, "क्योंकि धार्मिकता के

लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है।"

इसलिए प्रार्थना बहुत ही महत्वर्पूण है। क्योंकि हृदय में स्थित विषयों को हम प्रार्थना के द्वारा बाहर स्थापित कर सकते हैं।

प्रार्थना मे परमेश्वर के वचन का उपयोग करना भी आवश्यक है, क्योंकि ऐसा करने से हम शारीरिक ढ़ग (क्षेत्र) से वचन का उपयोग करने के द्वारा आत्मिक रूप से हम विषयों का निर्माण कर रहे हैं। और जो कुछ हम अत्मिक रूप से करेंगे वह शारीरिक रूप से भी स्थापित होगा।

हमें प्रार्थना में लगातर परमेश्वर के वचन का उपयोग करना चाहिए और हमें इस तरह से प्रार्थना करना चाहिए:

"हे पिता, मैं आप पर विश्वास करता हूँ। मैं विशवास करता हूँ कि आपने मुझ से इतना प्रेम किया कि आपने अपने पुत्र को मेरे लिए क्रूस पर मरने के लिए भेज दिया।

मैं विश्वास करता हूँ कि आपने मुझे अपने पवित्र आत्मा से भरा है। मै विश्वास करता हूँ कि आप मेरे जीवन के लिए एक योजना रखते हैं, और यह पूरा होने के लिए आप मुझे तैयार कर रहे हैं।

मैं विश्वास करता हूँ कि आपका अभिषेक मुझ पर है जिसके कारण यदि मैं बीमार लोगो के लिए प्रार्थना करूँ तो वह चंगा किए जा सकते हैं और यदि दुष्टात्माओं को निकाल दूँ तो वह भाग जाते हैं।

मैं विश्वास करता हूँ कि आपके वचन के अनुसार मै जो कुछ भी करता हूँ वह सफल और समपन्न होता है।"

परमेश्वर ने हमारे विषय में जो कुछ भी कहा है उसके वचन में हमें उसे विश्वास करते हुए और अपने मुहँ से मानते हुए चलना चाहिए।

और एक बात उसने हम से कहा है कि उसने हमें दासत्व कि आत्मा नहीं दी जिस कारण हम भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा दिया है, शक्तिर्पूण आत्मा दिया है और प्रेम का आत्मा दिया है। इसलिए हमें हमेशा यह कहते रहना है कि, "मैं नही डरूँगा!"

विश्वास ही प्रचलित होगा

> यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूँ, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
>
> मत्ती 16:17,18

प्रभु यीशु इस वचन में किस पत्थर कि बात कर रहे है ? वह विशवास नामक पत्थर कि बात कर रहे हैं। वे शमौन पतरस से कह रहे है कि जिस विश्वास को उसने प्रकट किया उस विशवास पर अपनी कलीसिया बनायेगा। "...अधोनोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे" (वचन 18)।

इस का अर्थ है जो व्यक्ति विश्वास के साथ चलता है उस पर अधोलोक के फाटक का कुछ असर नही होता।

भय नरक से आता है। इसलिए यूहन्ना कहता है "... भय से पीडा होता है..." (1 यूहन्ना 4:18)। यदि हम भय का सामना विश्वास से करेंगे तो नरक भी उसके आगे प्रचलित नही होगा।

स्वर्गीय राज्य की कुंजियाँ

मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बाँधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।

मत्ती 16:19

प्रभु यीशु कह रहा है कि, "जो कुछ भी स्वर्ग में हो रहा है उसे पृथ्वी पर लाने का मैं तुम्हें शक्ति और अधिकार देता हूँ।"

यह पिता से यीशु की उस प्रार्थना का फल है जिसे उसने मत्ती 6:10 में करना सिखाया था: "तेरा राज्य आये, तेरी इच्छा पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है।"

बाद में मत्ती 18:18 में यीशु ने बाँधने और खोलने के लिये यही सामर्थ सभी शिष्यों को प्रदान की, जब उसने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे वह स्वर्ग में बँधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे वह स्वर्ग में खुलेगा।"

यीशु उनसे यह कह रहा था कि वह उन्हे सामर्थ्य और अधिकार दे रहा है कि वे उस कुंजी का उपयोग करें कि जैसे स्वर्ग में परमेश्वर की इच्छा पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो।

मैं विश्वास करता हूँ कि जो कुंजी उसने पतरस और अन्य शिष्यों — और हमें — दी है, वे उन विभिन्न प्रार्थना के संबंध में हो सकती हैं जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं।

तत्पर प्रार्थना प्रभावशाली होती है

धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।

एलिय्याह भी तो हमारे समान दु:ख-सुख भोगी मनुष्य था; और उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि मेंह न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा। फिर उसने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई।

याकूब 5:16-18

किसी भी संस्था में किस के पास अधिकार और सामर्थ्य होता है ? क्या उसके पास नहीं जिसके पास चाबियाँ होती हैं। चाबियाँ क्या करती हैं? वे खोलते और बंद करते हैं। खोलने और बांधने का यही अर्थ है।

जब हम किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते है तो हम उसके लिए रखे हुए आशीष को खोल देते हैं। हम उसके लिए नर्क का फाटक खोल देते जो उसे पकडे रहा था।

इसी प्रकार जब हम अपने लिए परमेश्वर से कृतज्ञतापूर्वक प्रार्थना करते है तो हम अपने आपके लिए अशीषों को खोल रहे हैं।

आपको और मुझे स्वर्गीय राज्य के कुंजियाँ दिए गए है, जिनके द्वारा हमें यह अधिकार और सामर्थ्य है कि हम परमेश्वर की इच्छा इस पृथ्वी पर पूरा होने मे सहायक बन सकते हैं जैसा कि स्वर्ग में पूरा होता है।

कितना सौभाग्य है!

यही कारण है कि शैतान हमें धोखे में रखना चाहता है और यह सोचने पर मजबूर करता है कि हमारा प्रार्थना प्रभावशाली नहीं है। ताकि हम निराश होकर प्रार्थना करना छोड दे। और इस कारण हम स्वर्गीय राज्य की कुंजियों का प्रयोग न कर सकें।

प्रार्थना के विषय में शैतान को तुम्हें निराश करने का अवसर मत दो। परमेश्वर से—सभी प्रकार के प्रार्थनाये करो विशवास के साथ क्योंकि तुम्हारे यथार्थ, सच्चा प्रार्थना और तुम्हारा विशवास जो कि परमेश्वर में है न की तुम्हारे अपने स्वय की शक्ति या सामर्थ्य मे चाहे वह विश्वास हो या यथार्थ प्रार्थना करना।

विनतीयुक्त प्रार्थना

> किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।
>
> फिलिप्पियों 4:6

हमने इस वचन को ध्यान किया जब हम निवेदनयुक्त प्रार्थना के बारे में पढ़ रहे थे।

विनती क्या है? इस वचन के अनुसार विनती का अर्थ है *निवेदन* करना।

निवेदन क्या है? निवेदन का अर्थ है किसी व्यक्ति द्वारा उस वस्तु का माँगना जिसके पाने का उसे अधिकार है लेकिन जो अभी तक उसके

पास नही है। इस तरह फौज़ में एक अफसर अपने सिपहियों के लिए बन्दुकों के लिए निवेदन करता है । एक सिपाही होने के कारण उसे अधिकार है कि वह बन्दुकों को पा सकता है लेकिन उन्हें पाने के लिए उसे अपने उपराधिकारी को एक निवेदन पत्र देना पड़ता है।

प्रभु ने मुझे सिखाया है कि जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम उन चीज़ों का निवेदन करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से ही निकाल कर अलग रख है जिनके हम योग्य है ताकि आवश्यकता पडने पर हम इन्हें माँग ले।

एक और उदाहरण हमारे निजी जीवन से होना चाहती हूँ । आपके और मेरे बैंक मे रूपए रहते है लेकिन ज़रूरत पड़ने पर हम बैंक जाकर एक चेक् लिखकर देते है जिसका अर्थ है हम बैंक से निवेदन कर रहे हैं कि हमारे रूपयों में से कुछ रूपए दिए जाए। जिनका हम इस्तेमाल कर सकते हैं ।

इस प्रकार जब प्रबंधक मेरे पति के पास आते हैं जो कि हमारी संस्था के वित्तीय-प्रबंधक हैं तो वे एक निवेदन पत्र देते हैं जिसमें वे लिखते हैं कि उन्हे कितने रूपये चाहिए और वे किस काम के लिए खर्च करेंगे। तब मेरे पति जो रूपये इस काम के लिए विभाजित किये गए है उस में से निकालकर उन्हे देते है।

प्रार्थना भी इसी प्रकार है—हम अपने स्वर्गीय पिता को निवेदन देते हैं ताकि प्रतिदिन के जीवन में हमें ज़रूरत पड़ने वाली चीजों को हम माँगते हैं।

यीशु के नाम मे माँगो

> उसी प्रकार तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूँगा और तुम्हारे मन आनन्द से भर जाएँगे; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा। उस दिन तुम मुझ से कुछ पूछोगे। मैं तुम से सच सच कहता हूँ,यदि पिता से कुछ मँगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।
>
> यूहन्ना 16:22,23

बाइबल हमें सिखाता है कि परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है। (भजन संहिता 139:1-6)। हमारे माँगने से पहले ही वह हमारे ज़रूरतों को जानता है। (मत्ती 6:8,32) फिर भी उसने हमे आदेश दिया है कि हम माँगे। (मत्ती 7:7)

आप और मैं केवल इच्छा रखने से चीज़ों को प्राप्त नही कर सकते। यदि हम यह इच्छा रखेंगे कि "शायद मेरे पास और पैसे होते," या "मुझे इस सरदर्द से छुटकारा मिले," या "मैं निडर होता" ऐसा सोचना स्वर्गीय निवेदन नही है।

जैसा कि हम याकूब 1:5-8 में पढ़ते हैं जिन चीज़ों की हमें ज़रूरत है उन चीज़ो का हम विश्वास के साथ माँगना है। और विश्वास करना है कि जो हमने माँगा है वह हमे परमेश्वर के गोदाम से ज़रूर प्राप्त होगा।

क्रूस पर चढ़ने से पहले यीशु ने अपने शिष्यों से कहा (यूहन्ना 16 में) कि हमें न केवल विश्वास करना है परन्तु हमें यीशु के नाम में माँगना है।

इसका अर्थ यह नही है कि हम जो कुछ भी माँगे उसके अंत में यीशु

का नाम जोड दे। यदि हम ध्यान नही देंगे तो हम इतने धार्मिक हो जायेंगे कि हर पंक्ति के बाद हम "प्रभु की स्तुति हो," "हल्लेलुय्याह" या "यीशु के नाम में" जैसे शब्दों को जोड देंगे। जब हम एसा करने लगेंगे तो इन शब्दो का भाव चला जाएगा।

यीशु मसीह का यह अर्थ नही था, उसका अर्थ था कि हम उनके नाम के प्रभाव का उपयोग करे, जैसा उसने हमे आदेश दिया है ताकि परमेश्वर की इच्छा इस पृथ्वी पर भी उसी तरह पूरी हो सके जैसे स्वर्ग में पूरी होती है। उनके कहने का मतलब था कि हम स्वर्गीय पिता परमेश्वर को निवेदन दे जिसके ऊपर प्रभु यीशु मसीह का हस्ताक्षर हो।

हमारी सेवकाई (संस्था) में कर्मचारीयों को अवकाश छुट्टी दिये जाते है जिन पर उनका पूरा अधिकार रहता है फिर भी निवेदन दिए बिना उन्हे एक भी दिन छुट्टी नही दिया जाता।

आपके और मेरे लिए स्वर्ग में सम्पत्ति इकट्ठा की गई है, जिसे यीशु मसीह के लहू से खरीदा गया है। (इफिसियों 1:11,12) उसका उत्तरधिकार हमें है लेकिन हम इसके लिए काफी निवेदन नही दे रहे हैं।

जब कोई कर्मचारी डेव् जो कि हमारे वित्तीय प्रबन्धक है, उन्हे निवेदन देते है और यदि कुछ दिनो में उन्हे उत्तर नही मिलता तो वे उनके पास फिर से आकर पूछते है कि मेरे निवेदन का क्या हुआ, क्या आपने उसे खो दिया है? मुझे कब मिलेगी छुट्टी मुझे इसका उत्तरधिकार है ?

जब आप और मैं निवेदन देते है परमेश्वर को प्रभु यीशु मसीह के नाम में तो हमें यह अधिकार है कि हम फिर से परमेश्वर से पूछ सकते है कि "आपने मेरे निवेदन का क्या किया। प्रभु जी, आप मेरे निवेदन

को भूले नही है, है ना?" ऐसा करना निर्लज्जता नही है क्योंकि ऐसा पूछने से हम प्रभु का सम्मान कर रहे है। इस से यह साबित होता है कि हम विश्वास करते हैं कि प्रभु अपने वचन का पक्का है क्योंकि वह विश्वासयोग्य है।

यीशु के नाम का उपयोग करो!

> अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा, माँगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
>
> यूहन्ना 16:24

यीशु ने हमें उसके नाम में माँगने को कहा ताकि हमारा अनन्द पूरा हो जाए।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि कई विश्वासियों के जीवन में आंनद और शान्ति इसलिए नही है क्योंकि उनके जीवन में प्रार्थना की कमी है। और प्रार्थना की कमी इसलिए है क्योंकि विश्वासी लोग जिन विषयों के लिए प्रार्थना करना चाहिए उन विषयों को वे शारीरिक प्रयत्नों से पाना चाहते है।

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि उसके पुनरुथान के बाद सब कुछ बदल जाएगा। उन्हे नई शक्ति और अधिकार जैसा कि उन्होने यीशु के मृत्यु व पुनरुथान से पहले नही किया, उसका अनुभव प्राप्त करेंगे।

"जब वो समय आयेगा तो तुम्हें मेरे पास आकर माँगने की ज़रूरत नही है तुम जो कुछ भी मेरे पिता से माँगोगे वह तुम्हे देगा।"

प्रभु यीशु के नाम में माँगने का अर्थ क्या है?

24 वचन के अनुसार यीशु के नाम मे माँगने का अर्थ है परमेश्वर को, यीशु को समर्पित करना।

प्रार्थना में हम हमारे निर्बल होने का मुख्य कारण यह है कि हम प्रार्थना में प्रभु यीशु को प्रकट करने के बदले हम अपने आपको प्रकट करते है। यदि हम किसी विषय में असफल होते है तो हम समझते है हम किसी भी प्रकार हमारे प्रति कार्य करने के लिए प्रभावित नही कर सकते।

बाइबल कहता है कि "परमेश्वर की दृष्टि मे हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान है।" (यशायाह 64:6)। तो परमेश्वर का देने के लिए तुम्हारे और मेरे पास कुछ भी नही केवल यीशु मसीह का लहू के।

इसलिए मुझे बहुत खुशी है क्योंकि मैं इस विषय के बारे मे अपने दूसरे किताब *"द वर्ड, द नेम द ब्लड"* में विवरित किया है।"

जब हम प्रभु यीशु के नाम में आते हैं उसके लहू से धुले हुए और विश्वास से माँगते है हमारे आवश्यकताओं के लिए। हम इसलिए माँगते हैं क्योंकि हम सम्पूर्ण है या परमेश्वर हमारा ऋणवद्द है परन्तु इसलिए कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते है और हमें वह सब कुछ देना चाहता है जिसकी ज़रूरत है और वह करने के लिए जो परमेश्वर चाहता है।

प्रभु यीशु के नाम में शक्ति है। स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेंके। (फिलिप्पियों 2:10) इसी नाम की शक्ति के कारण हम बीमारों पर यदि हाथ रखकर प्रार्थना करेगे तो वे चंगा हो जाएँगे और यदि दुष्टात्माओं को भगाऐगे तो वह

फरार हो जाएँगे और हम वे काम कर सकेंगे जो यीशु मसीह ने किया बल्कि उस से ज्यादा हम कर पायेंगे परमेश्वर की महिमा के लिए। (मार्क 16:17,18; यूहन्ना 14:12)।

यीशु मसीह ने हमारे लिए बहुत ही महिमायुक्त सम्पत्ति खरीदी है अपने लहू के दाम से, जिसके हम भागीदार है (रोमियों 8:17)। उसने जो कुछ भी कमाया है स्वर्ग में वह हमारे लिए है। हमारे पास उस गोदाम की कुंजियाँ है और वो कुंजियाँ हैं प्रार्थना।

हमें भय में जीकर खोना नहीं है। आओ उन स्वर्गीय कुंजियों का उपयोग कर हम स्वर्गीय दरवाजों को खोलें ताकि स्वर्गीय आशीषों की वर्षा हो हमारे उपर, परमेश्वर की महिमा के लिए। ताकि उसकी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी होवे जैसे स्वर्ग में पूरी होती। ताकि हमारा आनन्द पूरा हो सकें।

सारांश

भय परमेश्वर से नही, भय शैतान से आता है।

भय के प्रति विश्वाशी का केवल एक ही अवस्था होनी चाहिए वह है कि "भय परमेश्वर से नही परन्तु, नरक से मुझे पीडा देने के लिये भेजा गया एक यंत्र है। मैं इससे नही डरूँगा, *मैं इसका सामना करूँगा* और इसे मेरे जीवन पर हावी होने न दूँगा।"

मैं अक्सर कहती हूँ कि भय वह आत्मा है जिसका प्रयोग शैतान करता है ताकि परमेश्वर के लोग सच्चे नेता के पास न जा सकें जो कि प्रभु यीशु मसीह है।

मेरा विश्वास है कि परमेश्वर हमारे साथ नम्रता से बर्ताव करते है ताकि हमारे जीवन के कई विषयों में हमे दासत्व से छुटकारा दिला सकें। बाइबल में निडर रहने के लिए कई सूचनायें हैं। जैसा कि मैंने पहले कहा मेरे जीवन की कई घटनाओं ने मुझे सिखाया है कि "डरो मत" का अर्थ है "भागो मत।"

मैं अपको प्रोत्साहित करती हूँ कि आप आगे बढ़ें, और यदि अवश्यकता पड़े तो डरते हुए करो लेकिन डर से भागो मत। निडरता और विश्वास के साथ भय का सामना करो।

याद रखिये परमेश्वर आपको हर तरह के भय से छुडाना चाहता है। भय का अर्थ है:

F - False	गलत
E - Evidence	सभूत का
A - Appearing	सच्च
R - Real	दिखना

भाग दो

वचन

भय पर विजय हेतु कुछ वचन

...डरो मत; खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा...

निर्गमन 14:13

देखो, उस देश को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सामने किए देता है, इसलिये अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस पर चढ़ो, और उसे अपने अधिकार में ले लो; न तो तुम डरो और न तुम्हारा मन कच्चा हो।

व्यवस्थाविवरण 1:21

तू हियाव बाँध और दृढ़ हो, उनसे न डर और न भयभीत हो; क्योंकि तेरे संग चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है; वह तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा।

व्यवस्थाविवरण 31:6

क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।

यहोशू 1:9

मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा...

क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा दाहिना हाथ पकड़कर कहूँगा, "मत डर, मैं तेरी सहायता करूँगा।"

यशायाह 41:10,13

...यहोवा अब यह कहता है कि, "मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है; मैंने तुझे नाम लेकर बुलया है, तू मेरा ही है।

जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूँगा और जब तू नदियों मे होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आँच न लगेगी और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।"

यशायाह 43:1,2

क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते है।

रोमियों 8:15

और किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते यह उनके लिये विनाश का स्पष्ट चिह्न है, परन्तु तुम्हारे लिये उद्धार का, और यह परमेश्वर की ओर से है।

फिलिप्पियों 1:28

किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

फिलिप्पियों 4:6,7

क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

2 तीमुथियुस 1:7

तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा। इसलिये हम निड़र होकर कहते है, "प्रभु, मेरा सहायक है, मैं न डरूँगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।"

इब्रानियों 13:5,6

प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।

1 यूहन्ना 4:18

भय से सामना करने के लिए प्रार्थना

हे, परमेश्वर, भय से मुझे छुडाइये। निडर और पवित्र साहसी होने के लिए सहायता कीजिए।

निडर होकर आगे बढ़ने और मेरे लिए जो कुछ आपने योजना बनायी है उसे पूरा करने के लिए सहायता करो।

आप मेरे से जितना प्रेम करते है उसे जानने के लिए सहायता करो क्योंकि परिपूर्ण प्रेम भय को भगा देता है, यीशु के नाम में माँगता हूँ। आमीन।

प्रभु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के लिए प्रार्थना

यदि आपने कभी भी प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता नही माना है, तो अभी आप मानने के लिए मै आप से विनती करती हूँ। निम्नलिखित रूप में प्रार्थना कीजिए यदि आप सच्चे हृदय से करेंगे तो आपके जीवन में एक नया जीवन का एहसास होगा।

हे पिता,

आपने जगत से इतना प्रेम रखा कि आपने अपना इकलौता पुत्र दे दिया। हमारे पापों के लिए जान देने के लिए ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये।

आपका वचन कहता है कि हम अनुग्रह के द्वारा विश्वास के कारण बचाए गए है जो कि एक भेंट है। उद्धार पाने के लिए हमारे पास कोई मार्ग नही है।

मैं विश्वास करता हूँ और अपने मुँह से मानता हूँ कि यीशु मसीह आपका बेटा है और इस जगत का उद्धारकर्ता है। मैं विश्वास करता हूँ कि वह मेरे लिए और मेरे पापों के क्रयदल के लिए क्रूस पर मारा गया। मैं विश्वास करता हूँ कि आपने, यीशु मसीह को मृत्यु मे से जीवित किया और उठाया।

मैं आपसे मेरे पाप क्षमा करने के लिए निवेदन करता हूँ। मैं यीशु को अपना प्रभु मानता हूँ। आपके वचन के अनुसार मैं बचाया गया हूँ और हमेशा के लिए आपके साथ रहूँगा। धन्यवाद पिताजी मैं आपका आभारी हूँ! मसीह यीशु के नाम में माँगता हूँ। आमीन

और जानकरी के लिए कृपया पढ़े यूहन्ना 3:16, इफिसियों 2:8,9; रोमियों 10:9,10, 1 कुरिन्थयों 15:3,4; यूहन्ना 1:9; 4:14-16, 5:1,12,13

लेखिका के विषय में

जॉयस मेयर विश्व के प्रमुख व्यवहारिक बाइबल शिक्षकों में से एक है। न्यू यॉर्क टाइम्स की नम्बर 1 सर्वोत्तम विक्रय की गौरव प्राप्त लेखिका, जिन्होंने नब्बे से अधिक प्रेरणादायक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें *लिविन्ग बियन्ड युवर फ़िलिंग्स, पावर थॉट्स,* बैट्टलफील्ड श्रृंखला की संपूर्ण पुस्तकें, और दो उपन्यास, *दि पेन्नी* और *एनि मिनट,* जैसी और भी अन्य पुस्तकें शामिल हैं। उन्होंने शिक्षा देने के लिए हज़ारों ऑडियो सी.डी. के साथ वीडियो सी.डी. की पूरी लाइब्रेरी का विमोचन किया है। संसार भर में जॉयस का प्रतिदिन के *जीवन का आनन्द लीजिए* नामक रेडियो और टेलीविज़न कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं, और वे सम्मेलनों के संचालन हेतु विस्तृत देशाटन करती हैं। जॉयस एवं उनके पति डेव चार वयस्क बच्चों के माता-पिता हैं और सेन्ट लुईस, मिसौरी में उनका निवासस्थान है।

To contact the author in the United States, please write:
Joyce Meyer Ministries
P.O. Box 655,
Fenton, Missouri 63026
or call: (636) 349-0303
or log on to: www.joycemeyer.org

To contact the author in India, please write:
Joyce Meyer Ministries
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
or call: 2300 6777
or log on to: www.jmmindia.org